

श्रीगुरुदेवकी

२

श्रीगुरुदेवकी

१२४

ॐ नमः श्रीगुरुवज्रसत्वाय ॥ ॥ अथ महादानवाच्छ ॥ ॥
ॐ अथ श्रीमद्दीक्षाकर्मसिंहनथागनस्य वज्रशुभ्रनगरव
रुद्रकल्पवैवस्वगमन्वकनहिमनेत्यर्वनदक्षिण
पार्ष्वकलियुगजम्बूद्वीपवासकिङ्कणशोभ्यावरुण
स्थरुमोनपालदगवागमन्याः पश्चिमकूलकेशव
न्याः पूर्वकूलशंकननयाः वायवकूलगपृच्छगि
निवनसुदक्षयारुमिरागउपच्छन्दपी० श्री ३ ह
नकविनृपाक्षवगमनताधिवासिगजनकदवालय

स्थानशी ३ स्वयं उच्यते रुद्रावकमन्त्रिधान ॥ अथ ४ आदि
गाह्यमहादानवाक ॥ ॥ अं अथ ४ शी मन्त्रगय विनाजमा
नशी मन्त्रसिंहगन्धगन्धस्य पर्याय एव कल्पे यथा नामलाक
धामो वेवस्वत्सन्वन्तः सत्यं वक्ता द्वापयान् कल्पियुग
पथमन्त्रवलेन वन्त्रवलेन उरुवपाकमन्त्रमवस्थादवा
सकिकुं कर्काटकनागवाजालयनागवासाहिधः महा
हृदादिरुद्रः विपन्निस्तथागन्धनाधिहिग उपद्रुदाहपी
१० उच्यते पद्मपर्वणः शी स्वयं उच्यते स्थान मन्त्रिनि

१ अथ ५ गमकल्लभ्यः विक्रमभ्यः कीलभ्यः सर्वभ्यः रु
सिकभ्यः १ गमपालभ्यः गल्लभ्यवाह्यवेगनागसन्निधान १
दादमर्क्यपरिवर्तनपालमधुल पक्व नद्यापश्चिमकूल १
पलावयाः उरुवकूलः कम्भवया पूर्वकूलः वागमत्याः
दक्षिणकूलः शी मन्त्रशीयाधिहिगः पूर्वकूलमोः स्वगन्तनागु
अथवी पञ्चपनि सन्निधान शी मन्त्रावलाकिभ्यः स्व
विजयनाथ ॥ अथ ५ आदि ५ ॥

१ रुगवान् श्रीमन्दाकिनिकलभाधिवासन गृहदवगात्र
 नाधनपूजनार्थं ॥ स्वरावसूक्ष्मसर्वधर्मात्मन्त्यादिः ॥ धर्मरा
 ॐ रुगवान् श्रीमूकसगवजविद्याजंनमास्तु ॥ कर्तुमिच्छामि न
 नार्थमधुलेकवृत्तात्मके निष्प्राप्तमनूकंपा ययूष्याकंपूजनाय ४
 च नमस्कृत्य ॥ रुगवान् प्रभादकर्तुमहर्षि ॥ समान्वाहर्षुमां
 वृद्धाजगदर्थं कयास्तिता ॥ स्तनगावाधिसत्वांश्च ओवांश्चाम
 रुदवगा ॥ दवगा लोकपालांश्च रुगासंवाधिसासनासाधना
 रितगासत्वांश्च यकनिद्वजवद्वधां ॥ अमूकाहं अमूकवज्री

रुवः अमूकनामाचार्यः अमूकदवगां अर्चयिष्यामि यथागता
 पवानः अमूकंपामूपादायः सासिष्यमगत्तुलसहितां सर्वसा
 निधं कर्तुमहर्षवजधूपनिर्यागं यामिवजधूपस्वाहा ॥ ॥
 कलभलीखनय ॥ रावना ॥ ॐ वज्रामृगादक ०० हं ॥ ॐ नयनफ
 महानफ स्वाहा ॥ मन्दाकिनीजलत्रूपं विराज्यः मणिटिवंकात्र
 जंपनिधनं नानात्रयमयकलर्षि आकाशजं शुद्धधर्मादि
 यां गडस्थं विराज्य ॥ गदनस्ववीजपनिधामनस्वस्वदवगां वि
 चित् ॥ स्वद्विजममूमां हानां क ॥ ॥ हानसत्त्वमानीयपूव

नाह सुदा ४ समयसत्त्वपवमयन् महानागधविस्तृयाः बोधिवि
रुद्रपाशुनहनं चिकथन् ॥ विद्रुचसमयदवगाहनदवगाथा
प्रकीर्तनं चिकथन् ॥ निलोजनकाय ॥ उं आ ४ कं खलु नाहणी
वज्रसत्त्वस्य सर्वपापदीपदहकालाय २ कं रुद्र ॥ मग ॥ उं आ ४ कं
खलु नाहणी वज्रसत्त्वस्य सर्वकारणपक्वभासाभिकूटकं रुद्र ॥ ०० का
उं आ ४ कं खलु नाहणी वज्रसत्त्वस्य सर्वपापविघ्नमानान्तरस्मीकूटकं
रुद्र ॥ पका ॥ उं आ ४ कं खलु नाहणी वज्रसत्त्वस्य सर्वावनानेपनेयकं रुद्र
हाजा भजा ॥ उं आ ४ कं खलु नाहणी वज्रसत्त्वस्य सर्वपक्षहानसक्ताना

नृधामयं हं रुद्र ॥ कयमिला ॥ जाकिस्वानलखसथूसंनय ॥ उंजुका
लमुख्यादि ॥ सतिखनकाय ॥ उंरुन २ सकन २ ०० विथवलि
विभाधननूचनकं हं रुद्र ॥ स्वाहा ॥ ॥ धननिमकुना ॥ उंजुय
मसहलंजमंसहलंजिविगं वमं समयं सर्वदवानां रुविनाहं नमं
यः अववर्त्ता रुविभ्यामिवाधिविरुक्कचनसाः नधगगकुलाय
रुिममानस्यानसंगयः ॥ ॥ अगमदिवसायुययामयदिनुरु
नृः सन्निवागारुययुः सर्वबुद्धनिमकुनार्थ ॥ धामेशुलधिल
उं वजादकवजहमं हं सलखसवधूजलधामस्वाहा ॥ सिद्ध ॥

उं वज्रग (अस्वाहा) ॥ सिंधु वंसहजं सारु विविगं सारु (अस्वाहा) निर्या
 नया मिथर्थं वज्रसिंधु निलके लस्य (अस्वाहा) ॥ अजं काया ॥ उं वज्रकु
 वाससस्वाहा ॥ वज्रालं का नपजा भयस मूदस्व नर्ण वज्रवा (अस्वाहा)
 दंडकवच वज्रवा (अस्वाहा) ॥ स्वां द्याय ॥ स्वस्ति वर कृन्ना वृक्ष
 स्वस्ति दवा गम कं का स्वस्ति सर्वा विरुगानि सर्व कानं दिर्ग युव
 वृक्ष पूजान् लव दवना नाम नव ॥ आचार्य समस्ति पत्र सर्व
 (अस्वाहा) यम मध्यमा स्वस्ति वादि पद गुरु स्वस्ति रुक्नु वृक्ष (अस्वाहा)
 स्वस्ति वज्रनामा (अस्वाहा) स्वस्ति प्रयाग न च्च स्वस्ति नाग स्वस्ति

दिवा स्वस्ति मध्यदिनस्ति नः सर्व गस्वस्ति वारु मरु माका (अस्वाहा) पा
 पमाग मरु ॥ सद्यस्त्वा सद्य प्राभा सद्य रगा चक वला सद्य वरु सुखि
 नसकु सर्व सकु निना मया ॥ सर्व रजा विपण्य मरु माका विषा पा
 पमाग मरु ॥ यानि ह रगानि समागता निस्तिगानि रुवानथ
 वाक निश कूर्वकु मरी सम गं प्रजा रुदिवा वरा गो वचन कुरुधर्म
 हागा ॥ उं वज्र नेव्यय स्वाहा ॥ स क्रय ॥ उं नेव्यय सर्व संयुक्त स्वा
 धरा कुरु मपलं वधू गन्ध वसा पर्म ददामि पति गृह्णी यथा सु
 खं वज्र नेव्यय स्वाहा ॥ साह ॥ उं पचा मग धा व स्वाहा ॥ कस्ति

ॐ त्रिकाम न धा न स्वाहा ॥ धा ला ॥ ॐ न मा र ग व क वी न वी न व मा ।
 य हं रु द ॥ ॐ म हा क ल्या ग्नि स न्नि रा य हं रु द ॥ ॐ ज रा त्म क र्वा के रा य
 हं रु द ॥ ॐ दं द्रा क ना नू ग रि ष ष म र्वा य हं रु द ॥ ॐ स ह स रू ज रा
 स्य ना य हं रु द ॥ ॐ य न भु पा ण रि भू ल ख द्वा ग धा वि य हं रु द ॥
 ॐ व्या ध जि नौ व न ध ना य हं रु द ॥ ॐ म धि मां ध का न ष प वा य हं
 रु द स्वा हा ॥ ॥ म न वि थ ॥ न गु रि ना मा व दू न त्र का धा न ना
 धि प र्श्वि न पा द प म्ना ॥ ॥ हा ना प रि षा ह न मा रु ना ला य दी प मा ला
 न त्र य कि न ग व ज दी प नि र्या म या मि ऊं आ ॥ हं व ज दी पं दि य

रु द स्वा हा ॥ पू ष्य न्या म ॥ प च प हा न पू जा ॥ ता य पू जा ॥ य ध र्मा
 रु द प्र रु वा रु न यां ग था ग न क व द रु षा थ या नि ना ध न वं वा दि
 म हा प्र म र्मा ॥ ॥ दं क र्मा कि ॥ ॐ अ काल मू र्वे स र्व ध र्मा ना मा य
 मू त्य न त्वा ॐ आ ॥ हं रु द स्वा हा ॥ दं क र्मा कि ॥ ॐ म र्शे पी क मा न रु ना
 य वा धि स त्वा य म हा स त्वा य म हा का र्त्तिका य नं दू ल दं क र्मा रु
 त्यं संप्र द द श ॥ ॥ धू रि पू जा या य वा क्य ॥

धनपंचगव्यवियगुवाक् ॥ उं नन्दारुद्रजयाशोभा कपीनाश्वरु
 पावनिः सर्वपापविनासार्थः प्रसिद्धस्वसमागरी ॥ ॥ सिद्ध
 नयगु ॥ ॥ अं नमो भूमीकालाभय ॥ उद्यागाननचक्रगाः नि
 लधूमावियुद्धमालाश्वनादग्धविजिगुयागिलाकमहिना
 पियुधवापुना वृद्धहाननसावित्राविकलयास्वानन्दसदा
 हृदाशवारुवविवावधविनहितावानाहिकापाशुवध ॥ ॥
 निर्मोनाविदिनसमसमुलगना काद्यादिवर्धवना प्राकाल
 कलनाकलाः मृगसवासुसुसुसुशपमा विशावृद्धकदंबक
 ॥ ॥

१२

दहमिया चक्रगुवादिनीसानेदालिलिगाईगावमाहिस्त्र
 उवावानाहिकावगसि ॥ ॥ ॥ स्नानयाकवाक् ॥
 यत्संगलंसकलसत्त्वहृदिस्तिगस्यसर्वात्मकस्यवनधर्मकला
 धिपस्यनिर्गद्यदायजनकस्यमहासखस्यनसंगलेरुवडुन
 पनमालिषक ॥ उं वूं गूं जिं खूं हूं गूं गूं खूं हूं ॥ धनि
 विम्वसमाद्धर्मा स्वद्धाउद्धावनाविला ॥ अग्न्याकानविला
 प्याथहृदकर्मसमूहव ॥ उं गूं हूं सर्वगथागनश्रुतिधकस
 मप्रियहूं ॥ ॥

१३

क्रमार्पण ॥ ॥ अथ पापवपनिहाना अस्मकं च मया विना यत्न
 नमधिकं नार्थं न सर्वं क्रतुमर्हसि ॥ क्रतुमर्हं नमस्व द्वावना
 नमसाय व ॥ वक्राद्या आकपालो यानि हंगा विधि क्रियाः
 आनि स्वस्ति च पश्चि च कृत्वा दाने पण गृह ॥ यत्कर्म इत्कर्म
 किं विनमया मूढधिया पुनः क्रतुवत् त्वया नाथ यदि ना १४
 गा भदहि ना ॥ न क्रतुदवना सर्वं क्रतुर्वै पणिमा सूच ॥ क्रतु
 स्वनपन क्रतु गहाय नमः ॥ यत्कर्म कायर्ज पापं यत्कर्म
 वाकं पापं यत्कर्म विरुर्ज पापं न सर्वं दृष्टया म्यर्ह ॥ नमा

सुगं वृद्धं न क (ग) व वाय्य न मा सुग स न प्रकाश कामिन
 सुगं पणि विद्यापनाय माव (ग) सर्ववका मा स दला वरु ॥
 न क्र २ पणी दप न मा ध्व वे पन म ग्वी क्रम स्य ॥ ॥ ॥
 मयं न य वा ॥ आदो कल्या नं मध्य कल्या नं पर्यवसान
 न कल्या नं स्वर्थ स्वव्यजनं कवलं पवि पूर्व पर्यवसाने च
 क्रवर्गं संपाका मयानि स्म आयु र्दिय (ग) धि पुर जि
 पहा स स्वा वे जन भन सं गा न मयानि स पुर जि ॥ ॥ ॥

मरुनि दाय ॥ अहानं मरु लं वम अ पानि नी जि ना रु मे स ला क या
 वे य वा जा ला का नां नि मि नं यथा ॥ उ व क्र २ सम क्र व क्र दिव्य व क्र

वि। गधन स्त्रोहा ॥ ॥ दक्षिण काय ॥ उं नमो रुगवत मं शशी कू मा
 नरु नाय वाधि सखाय महा सखाय महा कान्ति का नाय शुभ वव जावा
 र्थाय ॥ यथा सक गो मख लु धा उ मय द सखा दो न सं प्र दय ॥ ॥
 स्वक पूजा याय ॥ स्वकूय वा निरु कूय भक्ति कर्त्य पनाय च पशु
 क्रद कने च वर वक सिद्धि नमस्तुते ॥ ॥ वाहन या नमस्तु कन ॥
 हित्वा वेऽर्जुनि पथं सुगतिं पदमापूयात् ॥ नयथा ॥ उं गधन ॥
 वि। गधन २ सर्व कर्मो वन वि। गधन स्त्रोहा ॥ ॥ रुस्य पम
 जानक ॥ पूर्व ज नमस्तु पापं पशु ज नमस्तु जायत ॥ सर्व पाप वि
 निमूकं स्वर्ग वा सं प्र दय ॥ ॥

रुन वं क वृवर्धु रं विदू पा उ धनं क नं प्र का स नं महा नाथं नमामि
 रीष नानन ॥ ॥ नमो अरु मरु काय ॥ वक्रा यक्षी महा देवी
 नमो त्रिभु को मात्री न क वधुं गी विष्णु वीच नमो नमो वा ना हि धा
 न नृपी च वं द्या पी न विग्रहा नि मा म्मी कालिका देवी महा लक्ष्मी न
 मास्तुते ॥ गक्ष पति वरु कं च महा काले नमो महे ॥ रुन वं रीष नं वा
 डंग धनार्थं नमो महे ॥ ॥ सूर्य चंद्र मंद वं धा गी पू ग वृद्धं गथा ॥
 रहस्य निरुग वं च नवी जं ना डु क डु क ॥ वृद्ध वजा क नं नाथं कं ज पा
 विक्र मो न कं गहन क्रय गध च क रिका या व न प्र द ॥ सर्वो पद व
 सं हा च महा विद्या मह र्द्धि का ॥ धन ना डु विनू टं च विनू पो रु कू
 वन कां ॥ भस्त्रा दी न्मी न पय्यं नं प्र का मा मि दि वा निर्ग ॥ ॥

नमो नि पूरि वली सिद्धि कर्तु नु सततं मायि

१८

१८-

॥ लाक श्वर्यः छीलसाकैः भूनाथ गुहसाग

नमः भूमिनाम्नैः मोक्षीः नमामि भूमाय पादमीनः ॥ कीं कान्त सहा न
थे कुरु स धर्मः विष्णुमानसं भूमाय पादमीनः ॥ शोकनाथं
नमाम्यहं ॥

सगं (शेया) कलु उद्यान संका र्ण फल ग्ण कादि जी विर्ण ॥ हं स वा
 ह न सं प स्यं नि ग्ण क नं न भ स दा ॥ भ न या ॥ वृं ऊ नं गु वि भु र्च
 सर्व सिद्धि महा क ल ॥ वे ध न न महं व न्द. सर्व सिद्धि प्र दा य की ॥
 मा म कि या उ दि ना र्क स मा व र्ध ला क्ता न स स म प ला ॥ गु म्भ
 के क मू र्वा दि न्या प म्भ वे र्ध स म प ला. सर्व स ल वि वि णं गि
 उ गान र्क्ष द ग न्वि ना ॥ र व क्रो दि म्भु वि णो भ दि व्य म्भु कू ठ २०
 म ल्ति ना. न व यो व न स प न्ना धा उ ग्ग ह व न्ग ग्ग ॥ सु धा
 न स ध ना मा हि न म क्क स न स र्द वी ॥ ॥

व संध ना स दा न्द्रा दा नि ड न व ना व ली सा ध नो पा यि का व क ल
 श्री सिद्धि व ल प दा ॥ व शु ध ना या ॥ ॥ स ग ल क लि व का ऊं मूल
 ला इ के धा नि ना का र्प्य सिद्धि प्र दा ना य. म न्न मा मि ग (व) ध व ॥
 ग ल्हा मे या ॥ महा ड द्वा क ला वा कं. ला लु जि का र्थ क न. द्वा द
 भा दि स्य महा क जं. व ज वी व न मा मि ह ॥ महा का ल या ॥ २१
 ऊ न नी सर्व स लानां. सर्व ना ग नि वा नि ती प र्थे न कान म स्या मि स
 र्वा ल्वा र्थ श य नी ॥ प्र क र्ण का या ॥ प्र हा पा न मि ना गु ष्ठा वा म
 घा भ ग धा वि (व) रु ग ला ह वि ना भ र्थ ग ज व मा ध न ध न ॥
 रु र्ध व र्ध महा वा र्ध र व क्क पा भ क न र्नी. सर्व इ ष्ठ नि ष्ठ नं द. अ
 व ल वी व न मा म्भ ह ॥

यागवनेंजगन्नाथं युवचावनमसदा सर्वसत्त्वास्त्वाध्वनं ।
 यागववनमाम्यहं ॥ हानदाकिमहादवी सहजानदनुपिनी
 प्रहाहास्वतृपासा वन्दे माकदायनी ॥ यागवनीया ॥

नमामि वज्रवाहि सर्वपापप्रभाचरी मानविध्वसनी दवी वृद्धत्वं कलदाय
 नी ॥ १ ॥ यथाचला दूतामृक कभी तिलोचनी सध्यासिद्धनवधुमि कल्लिख
 यनी ॥ २ ॥ पञ्चमधु नीरसाहो स्वेथखडाङ्ग क विनाकनवज कनारस
 वन्दवज्रविनामिनी ॥ ३ ॥ मृदायकथनादहामधुमालावीरुषिनीः ली
 लाहाभ्यमृयाताया वन्दे तुलाकसन्दरी ॥ ४ ॥ हेनवायमृवायैव विक्रा
 नक ६० चर्विकाः विध्वंसविध्वना नाकवन्दे हीमहयैकनि ॥ ५ ॥ जगवि
 नागयामेध्यावाताय विसृष्टिनाः समूहो महादवी वन्दे लोकायना
 नीनी ॥ ७ ॥ पञ्चमृक सदायाने पञ्चसाक्षि महाजनः गीतवायलता

२२

नित्यवन्दनी सर्वदिनी ॥ ८ ॥ सहवसाहता नन्दनित्यं कुष्ठासवालयाः न
 धचनं नृपनी वन्दे नृत्त्ययनायनी ॥ ९ ॥ त्वोदविमिद्विदाशी च यागवनी
 वसदा मनीः पूजनिर्वानदाशी वा वन्दे वृद्धस्य मातुर्नी ॥ १० ॥ ॐ ॥
 ॐ नमो श्रीवज्रवाहा ॥ नमस्तु वज्रवाहा दिव्यरूपिण्यनुपिनी काकिमूर्तिद
 यादेविनमस्तु वज्रवाहिनी ॥ ११ ॥ वंधुरपुत्र्य सहस्रभक्तपिजिनं नमो
 हिमिद्विदाशी च नमस्तु वज्रवाहिनी ॥ १२ ॥ द्वादसवर्षसवर्धुनवदृष्टसुन
 पिनी तुलाव्यापिनी देवि नमस्तु ॥ १३ ॥ दयेद्वयकं रीचसंतापकं
 वासिनी त्रिभुवि न्यवर्धुन नमस्तु ॥ १४ ॥ देवहनुक सगुपतिर्लुचिजिन
 यनी कर्किकपालकैतायेन नमस्तु ॥ १५ ॥ खड्गाङ्गो न सैका नैव नकुश
 विण्वमालीकुकिमूर्तिप्रदातया नमस्तु ॥ १६ ॥ पुष्कमालाधनादवी पञ्च
 मृदाविरुषिता हाताकनधनी पूजाय नमस्तु ॥ १७ ॥ वा मरुजकपाल सुद

२३

क्रोशुजकर्तिका कालमुखी च जादवी नमः ॥ ८ ॥ एकवक्त्रा सवान्
रादिकुजासूर्यमधुलपादां गृहस्थितादवी नमः ॥ ९ ॥ सूर्यमधुल
मध्यस्थं किरीटामक कालकं जेलाकमाह निदवी नमः ॥ १० ॥ सर्व
पापहरो दवी सर्वपापविनासनी धनमाकुप्रदातया नमः ॥ ११ ॥ सर्व
मरुप्रमहनी प्रत्यकुति दिवानिर्सी भासापु न प्रयत्नादक नमः वज्रया
गौनी ॥ १२ ॥ इति वज्रयागिनोस्तु ॥ ॥ ॥ (४) ॥

MS. ARCHIVES

124

MS. ARCHIVES